आज कि मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:04-09-14

प्यार के सागर बाप ने अपने आज्ञाकारी, वफादार और फरमान-वरदार बच्चों प्रति कहा, मीठे बच्चे - सदा श्रीमत् पर चलना ही श्रेष्ठ पुरुषार्थ हैं. श्रीमत् पर चलने से ही आत्मा का दीपक जग जाता हैं.

बाबा ने आज सारी मुरली में हम बच्चों को सदा श्रीमत् पर चलते रहने कि शिक्षा दी हैं और कहा श्रीमत् पर चलने से ही आत्मा सतोप्रधान-पावन बन जायेंगी और सतयुग में ऊँचा पद प्राप्त करेगी.

क्या हैं ईश्वरीय मत या कहे श्रीमत्?

1. बाबा हमें सबसे पहली मत देते हे, बच्चे खुद को आत्मा समझ मुझ एक बाप को याद करो, तो तुम्हारे 63 जन्मो के विकर्म, जो विकारों के रूप में आत्मा में हैं वह भस्म हो जायेंगे ओर आत्मा संपूर्ण पावन बन जायेंगी.

2. जितना हो सके उतना देही-अभिमानी बनने की प्रैक्टिस करो. स्वयं को आत्मा समझो और सम्बन्ध-समपर्क में आने वाले को भी आत्मा भाई ही देखो.

3. संपूर्ण पवित्र ब्राह्मण जीवन. इसलिए बाबा हमें युक्ति बताते है एक-दूसरे के प्रति आत्मा भाई-भाई की वृति रख, दृष्टि से एक-दूसरे को बृकुटि में आत्मा भाई को ही देखो.

4. मन को मजबूत बनाने के लिए, स्वदर्शन चक्रधारी बनो. बाबा हमें ये ड्रिल इसलिए सिखाते है, जिसे हमें स्वचिंतन करने की प्रैक्टिस हो तो हमारी स्थिति अंतर्मुखी बन जायेगी. अंतर्मुखी स्थिति बहुत मजबूत स्थिति हे, जिसे हम माया के कोई भी वार से सहज ही बच सकते हैं. व्यर्थ संकल्पों पर क़ाबू पा सकेंगे.

5. साधन, सम्पति, सम्बन्ध और शरीर से संपूर्ण वैराग्यता. इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर मेरा मन अगर माया के वश हो कर साधन, सम्पति ओर सम्बन्ध में भटक गया तो ईश्वरीय प्राप्तिओं से हम वंचित रह जायेंगे. इसलिए बाबा हमें साधन, सम्पति, सम्बन्ध और शरीर से संपूर्ण वैराग्य दिलाते है ओर सच्चाई, सादगी ओर स्वच्छता को हमारे जीवन में धारण करवाते हैं.

6. कर्मयोगी जीवन. ब्राह्मण जीवन में माया से बचने के लिए, बाबा हमें याद की यात्रा में रहने का सिखलाते हैं. हर कर्म करते बुद्धि का योग एक बाप से रहे इसे ही कर्मयोगी जीवन कहा जाता हैं.

7. दैवी गुणों को धारण करना हैं. बाबा ने कहा है, किसी भी आत्मा को मन-वचन-कर्म से दुख नहीं देना हैं.

8. ईश्वरीय नियमबद्ध जीवन. सुबह अमृत वेला, मुरली क्लास, खाने-पीने की धारणा, कम बोलो - मीठा बोलो - धीरे बोलो. साम का योग ओर चार्ट.

9. खुद को निमित्त समझ कर, विश्व की सर्व आत्माओं की सेवा करना ओर ट्रस्टी हो कर संसार का कारोबार चलाना.

ॐ शांति.

Please provide your feedback to Atma Bhai on email:
a.brahmin.soul@gmail.com .